विश्व नाथ मन्दिर बनारस के ध्वस्त का असल कारण!

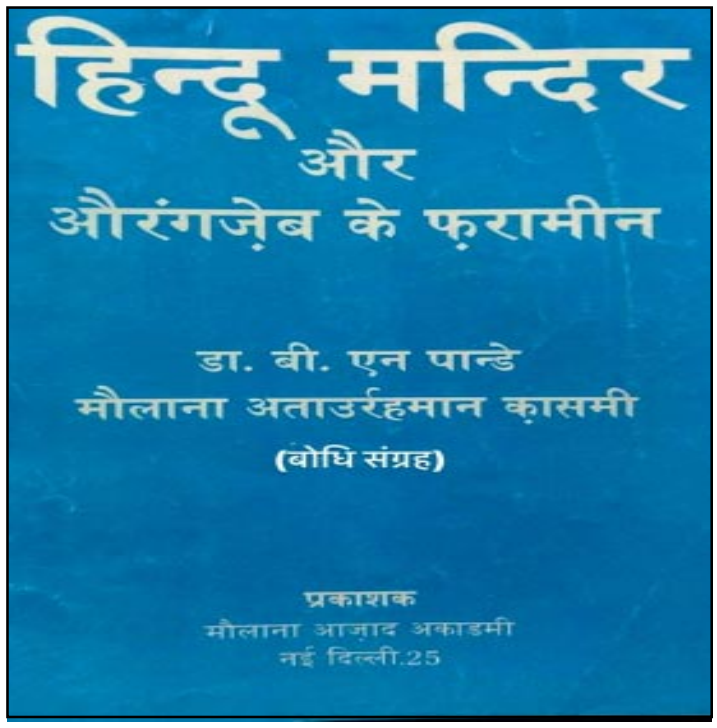

विश्वनाथ मंदिर के तहखाने में हुआ था "कछ की हिंदू महारानी" से रेप!

"वह तहखाना विश्वनाथ देवता की मूर्ति के नीचे था! जिसका दरवाजा गणेश जी की मूर्ति के पीछे छिपा था! -डॉ. विश्वंभर नाथ पाण्डे

लेकिन कुछ घटनाएं इस बात की भी साक्षी हैं और हर प्रकार के सन्देहों से भी पाक साफ कि औरंगजेब ने बनारस के विश्व नाथ मन्दिर और गोल कुन्डा की जामा मस्जिद के ध्वस्त का आदेश भी दिया था लेकिन जिन हालात के तहत मन्दिर और मस्जिद को ध्वस्त किया गया और उसकी जो वजूहात बयान की गयीं उनका लाभ औरंगज़ेब को पहुंच सकता है।

विश्वनाथ के मन्दिर की घटना इस प्रकार है कि बंगाल जाते हुए औरंगज़ेब, जब बनारस के पास से गुजरा तो उन हिन्दू राजाओं ने जो उसके दरबार में आते जाते रहे थे औरंगजेब से वहां एक दिन ठहरने की विनती की ताकि उनकी रानिया बनारस में गंगा स्नान और विश्व नाथ देवता की पूजा कर सकें। औरंगजेब तुरन्त राज़ी हो गया। और इन सब की रक्षा के लिए बनारस के पांच मील के रास्ते पर सेना की टुकड़ियों को नियुक्त कर दिया। रानियां पालकियों में सवार थीं। गंगा स्नान करके वे पूजा के लिए विश्व नाथ मन्दिर के लिए रवाना हुई।

पूजा के बाद सिवाए कछ की महारानी के सारी रानियां वापस आ गयीं। महारानी की तलाश में मन्दिर की पूरी सीमाएं व इलाका छान डाला गया लेकिन उसका पता न चल सका। औरंगजेब को इस घटना का पता लगा तो वह बड़ा नाराज़ हुआ और उसने अपने उच्च पदाधिकारियों को रानी की तलाश में भेजा। अन्त में वे गणेश मूर्ति के पास पहुंचे जो दीवार में लगी हुई थी और जो अपनी जगह से हिलायी जा सकती थी। उसे हरकत देने पर उन्हें सीढ़ियां नजर आयीं जो किसी तहखाने में जाती थी। वहां उन्होंने एक बडा भयानक दृश्य देखा कि रानी की इज्जत लूटी जा चुकी थी और वे दहाड़ें मार मार कर रो रही थी।

यह तहखाना विश्व नाथ देवता की मूर्ति के ठीक नीचे था। इस पर तमाम राजाओं ने क्रोधित होकर बड़ा विरोध किया चूंकि अपराध बड़ा घिनौना था इसलिए राजाओं ने अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की। औरंगजेब ने आदेश दिया कि चूंकि वह पवित्र स्थान अपवित्र हो चुका है इसलिए विश्व नाथ देवता की मूर्ति को वहां से किसी अन्य स्थान पर पहुंचा दिया जाए और यह कि मन्दिर को ध्वस्त कर दिया जाए और महन्त को गिरफतार करके सजा दी जाए।"

डाक्टर पी एल गुप्ता के दस्तावेजों के आधार पर डॉक्टर पट्टाभि सीतारमैया जो पटना म्यूजियम के पूर्व प्रबन्धक हैं उन्होंने इस का उल्लेख अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (पर और पत्थर) में उल्लेख करते हुए इस घटना की पुष्टि की है।

जामा मस्जिद गोलकुन्डा का ध्वस्त होना

गोल कुन्डा के प्रसिद्ध शासक तानाशाह, ने यह हरकत की कि शाही कर वसूल तो किया परन्तु शहंशाह दिल्ली को इसकी अदाएगी नहीं की। कुछ ही सालों में यह राशि करोड़ों तक पहुंच गयी, तानाशाह ने यह खजाना ज़मीन के अन्दर दफ़न करके उस पर जामा मस्जिद का निर्माण करा दिया। जब औरंगजेब को इसका पता लगा तो इस मस्जिद को ध्वस्त करने का आदेश पारित किया और दफन किया हुआ खजाना ज़ब्त करके जनता के कल्याण के कामों में खर्च कर दिया। उपरोक्त घटना से इस बात का पता लगता है कि औरंगजेब ने जहां तक अदालती जांच का संबंध था, कभी भी मन्दिर व मस्जिद में कोई भेदभाव नहीं रखा।

नोट : यह टिप्पणी अक्षर अक्षर डॉ. विश्वंभर नाथ पाण्डे की पुस्तिका "हिंदू मंदिर और औरंगज़ेब के फरामीन" से, जो मौलाना आज़ाद अकादमी, नई दिल्ली 25 से प्रकाशित है।

-बोधिसत्व, मुंबई

डबुआ सब्जीमंडी में पार्किंग के नाम पर लूट का ठेका, वसूली के लिये गुंडा गिरोह करता है मार-पीट

फ़रीदाबाद (म.मो.) ज़िले की सबसे बड़ी सब्जी व फ़ल मंडी है डबुआ। यहां सैंकड़ों ट्रक रोजाना सब्जियां व फ़ल लेकर आते हैं। इन्हें खरीदने के लिये शहर भर के छोटे-बड़े अनेकों थोक व परचून ब्यापारी आते हैं। इनमें से कई छोटे बड़े वाहनों में माल लेकर जाते हैं तो सैंकड़ों रेडड़ी रिक्शा वाले यहां से खरीदकर शहर की गलियों में घूम-घूम कर बेचते हैं। इनके अलावा सैंकड़ों छोटे विक्रेता इसी मंडी में रेहड़ी लगा कर या फ़ड़ी लगा कर शब्जी आदि बेचते हैं।

मंडी में खरीदारी को आने वाले तथा मंडी में ही बैठ कर फ़ल व शब्जी बेचने वालों को लूटने के लिये मार्केट कमेटी ने बाकायदा 13 लाख 72 हजार मासिक का ठेका दे रखा है। कहने को तो यह ठेका पार्किंग के लिये है यानी जो कोई मंडी में अपना वाहन खड़ा करके खरीदारी करने जाये तो उससे रखवाली के नाम पर पार्किंग फ़ीस ली जाय। लेकिन इस मंडी में कोई भी ब्यक्ति पार्किंग में रखवाली हेतु अपना वाहन छोड़ कर कही नहीं जाता। सभी लोग जहां-जहां से भी माल खरीदना होता है वहां-वहां अपना वाहन ले जाते हैं। लेकिन पार्किंग के नाम पर वसूली करने वाले ठेकेदार का गुंडा गिरोह हर रिक्शा, रेहड़ी बड़ा-छोटा वाहन, यहां तक कि दुपहिया को भी बिना वसूली के नहीं छोड़ता।

इसी वसूली को लेकर दिनांक 14 मई शनिवार को इस गुंडा गिरोह ने राजकुमार नामक एक दुपहिया सवार लड़के को जम कर पीटा, उसे छुड़ाने उसकी मां विमला देवी आई तो उसे भी जमकर पीटा। यह पीटाई तो तब हो गई जब कि उस लड़के ने इन गुंडों को 10 रुपये देकर पर्ची कटा रखी थी। कसूर केवल इतना था कि पर्ची मां के पर्स में थी जो थोड़ा पीछे रह गई थी। जब तक मां पहुंची तो गुंडे लड़के को बूरी तरह से धुन चुके थे और धुनाई में बाधा बनती उसकी मां को देख कर तो वे

पीड़ित मां बेटा व गुंडा गिरोह

बिना कुछ पूछे मां पर भी पिल पड़े। इत्तफ़ाक से किसी ने इस मार-पिटाइ का वीडियो बना कर वायरल कर दिया।

सूचना मिलने पर डबुआ थाने की पुलिस तो आई जरूर लेकिन गुंडा-गिरोह के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं थी। कारण बड़ा स्पष्ट है कि कोई भी गुंडा पुलिस के सहयोग बिना गुंडागर्दी नहीं कर सकता। जाहिर है कि इस सहयोग के बदले पुलिस को भी बराबर चुग्गा-पानी मिलता रहता है।

पीड़ित मां-बेटे को पुलिस ने ले जाकर थाने में बिठा दिया, न तो उनकी कोई रिपोर्ट लिखी जा रही थी और न ही मेडिकल करवाया जा रहा था। चंद घंटों में जब मार पीटाई का वीडियो भयंकर रूप से वायरल हो गया और उच्चाधिकारियों ने इस बाबत थाने से पूछताछ की तब कहीं जाकर पुलिस ने मार-पीट की हल्की धाराओं में नाम मात्र का मुकदमा दर्ज करके पीड़ितों का मेडिकल करवाया। खानापूर्ति के लिये पांच हमलावरों में से एक की गिरफ्तारी भी डाल दी तथा दो दिन बाद उनके ठेकेदार को भी गिरफ्तार कर लिया।

तहकीकात करने पर **'मज़दूर मोर्चा'** ने पाया कि मंडी में रेहड़ी एवं फ़ड़ी लगाने वालों से यह गिरोह रोजाना 50 रुपये गुंडा टैक्स वसूल करता है। एक और खास बात यह भी नोटिस में आई कि मार्केट कमेटी ने जो फड़ें कुछ चहेते लोगों को मासिक किराये पर दे रखी हैं, वे लोग वहां खुद न बैठ कर आगे तीन-चार लोगों को किराये पर बिठा देते हैं। मार्केट कमेटी के ये लाइसेंसी किरायेदार खूद तो मात्र चार हजार मासिक किराया देते हैं और आगे वास्तविक बैठने वालों से 10-15 हजार मासिक वसूली करते हैं।

अब समझने वाली बात यह है कि सब्जी जैसी छोटी सी चीज़ पर भी अनेकों सरकारी टैक्सों के साथ-साथ इस तरह के किराये व गुंडा टैक्स अदा करने वाले सब्जी विक्रेता बेचारे यह सब घर से तो देने से रहे, वसूली तो उपभोक्ता से ही की जायेगी। बढ़ती महंगाई के पीछे अन्य कारणों के साथ-साथ एक कारक यह भी समझ लें।

रेलवे को इन्तजार है किसी बड़े हादसे का

फ़रीदाबाद (म.मो.) सोमवार दिनांक 16 मई को एनआईटी रेलवे स्टेशन परिसर में भयंकर आग लगी तो पता चला कि रेलवे के पास उसे बुझाने का कोई इन्तजाम नहीं था।

स्टेशन बिल्डिंग के सामने नियमित चलने वाली चार लाईनों के अलावा एक लूप लाईन, जिसका इस्तेमाल यदा-कदा ही हो पाता है, के आस-पास बड़ी-बड़ी सूखी झाड़ियां व घास में करीब एक बजे भयंकर आग लग गई। विदित है कि कोई भी आग लपटों में परिवर्तित होने से पहले धीरे-धीरे सुलगती है। उस पर ध्यान न दिये जाने पर वह लपटों में परिवर्तित हो जाती है। ऐसा ही कुछ इस स्टेशन पर भी हुआ।

उस दिन की भयंकर गर्मी के दौरान यह आग करीब दो घंटे तक बेरोक-टोक चलती रही। रेलवे के पास इसे बुझाने का

कोई इन्तजाम नहीं था। दमकल गाड़ी पूरे एक घंटे बाद पहुंची तो वह घटना स्थल से करीब 600 मीटर दूर खड़ी होकर तमाशा देखने के अलावा कुछ न कर सके। क्योंकि आग तक पहुंचने के लिये वहां कोई रास्ता ही उपलब्ध नहीं था। स्टेशन के एक-दो कर्मचारी ने बाल्टियों द्वारा नाले से पानी लेकर बुझाने का प्रयास जरूर किया जो कि नाकाफ़ी था। शुक्र यह रहा कि इस दौरान कोई रेल गाड़ी वहां से नहीं गुजड़ी वरना कोई बड़ी दुर्घटना भी हो सकती थी।